2020 - 2021

हिंदी - मलयालम साहित्य एवं सिनेमा में

क्वीर विमर्श

सम्पादक

डॉ.निम्मी ए.ए

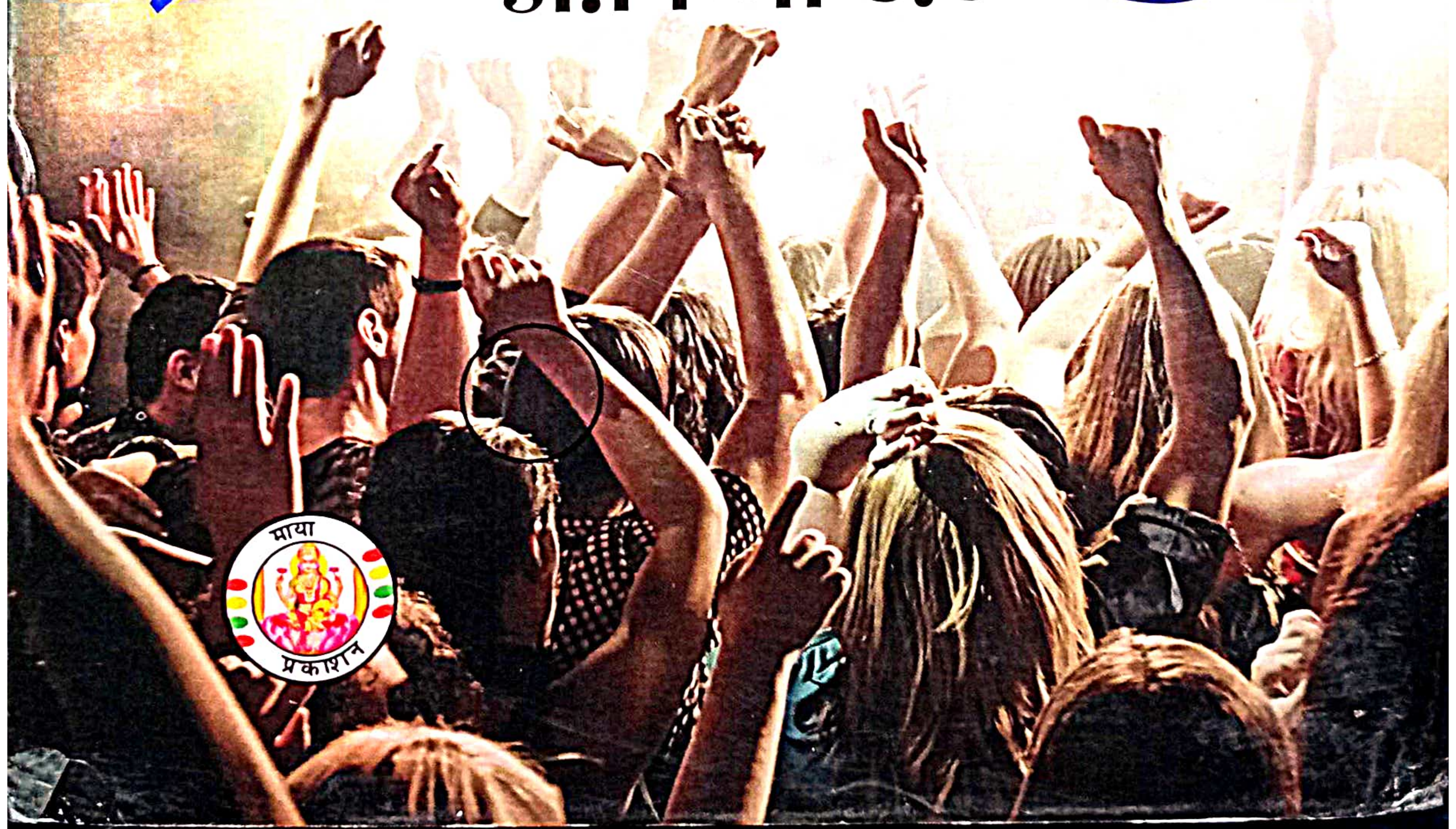

ISBN : 978-81-951311-8-1

पुस्तक : हिंदी-मलयालम साहित्य एवं सिनेमा में क्वीर विमर्श
संपादक : डॉ. निम्मी ए.ए.
© : संपादक
प्रकाशक : माया प्रकाशन

6A/540, आवास विकास हंसपुरम्, कानपुर-208021

मो. 9451877266, 7618879266, 6393609403

Email : mayaprakashankanpur@gmail.com

संस्करण : प्रथम : 2021
शब्द-सज्जा : रुद्र ग्राफिक्स, नौबस्ता, कानपुर
मूल्य : 750.00
मुद्रण : सार्थक प्रेस, नौबस्ता, कानपुर
जिल्दसाज : तबारक अली, पटकापुर, कानपुर

Hindi-Malayalam Sahitya Evam Cinema Mein Queer Vimarsh
Edited by : Dr. Nimmy A.A.
Price : Sevent Hundred Fifty Only.

15. मलयालम सिनेमा में चित्रित तृतीय प्रकृति की त्रासदी ('अर्धनारी' और 'ओडुम राजा आडुम रानी' के विशेष संदर्भ
ग्रीष्मा एलिज़बथ के.ए 166

16. शिखण्डी का अन्तर्द्वन्द्व : पंखुड़ियाँ अन्तर्द्वन्द्वों के सन्दर्भ में
डॉ. सी.जे. प्रसन्न कुमारी 171

17. ट्रांसजेंडर समाज : हाशिए से रंगमंच तक
डॉ. उषा नायर 179

18. सदियों का संघर्ष – त्रिलिंगी जीवन–यथार्थ
डॉ. श्रीलता विष्णु 186

19. मलयालम कहानी और तृतीय लिंगी विमर्श
डॉ. विजी. वी 196

20. किन्नरों की व्यावसायिक समस्याओं का दर्पण : दापा
डॉ. संगीता चौहान 211

21. हिंदी कहानियों में चित्रित किन्नर
डॉ. संजय एल. मादार 217

22. हिन्दी कहानियों में किन्नर जीवन
डॉ. वडचकर 221

23. विजेंद्र प्रताप सिंह की कहानियों में तृतीय लिंगी विमर्श
डॉ. रवि कुमार गोंड़ 227

24. तृतीय लिंगी जीवन की कविताई – 'दैवत्तिन्टे मकल'–(ईश्वर की बेटी) के विशेष संदर्भ में
डॉ. प्रिया ए. 234

25. इतरलिंगी अस्मिता और हिंदी कविता
डॉ. प्रमोद कोवप्रत 241

26. 'अस्तित्व की तलाश में सिमरन' : किन्नर जीवन की त्रासदी
डॉ. जहीरुद्दिन रफियोद्दिन पठान 248

27. स्त्री–समलैंगिकता और मलयालम कविता
विनोद पी. 256

28. 'पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नाला सोपारा' में किन्नरों का जीवन संघर्ष
डॉ. रजिला ओ.पि. 264

29. अधूरेपन की दास्तान : मलयालम कहानी 'अवन्' के संदर्भ में
डॉ. राजेश्वरी के. 267

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth
Dist. Parbhani

College, Sonpeth • Late Ramesh Warpudkar (ACS) Dist. Parbhani

22

हिन्दी कहानियों में किन्नर जीवन

डॉ. वडचकर

साहित्य मनुष्य जीवन का सर्वोत्कृष्ट उत्स् है। मनुष्य जीवन के विराट, व्यापक, विस्तृत आयामों को साहित्य में ही पूर्णता प्राप्त होती है। साहित्य में स–हित का भाव होता है। साहित्य वही है जो सबको साथ लेकर चलता है। संस्कार संस्कृति, सभ्यता के पोषण के साथ–साथ जानकारी देना, ज्ञान प्रदान करना, शिक्षित और सुरक्त बनाना साहित्य का लक्ष्य है। जिस समाज में इसका आदर नही होता वह समाज सुसंस्कृत, सभ्य नही होता वह समाज सुसंस्क्त साहित्यकार की प्रज्ञा नई बनाती है। साहित्य की प्रतिबध्दता सभ्य मानवतावादी और न्यायसंगत सामाजिक व्यवस्था निर्माण करना है। यही सामाजिक कसौटियों के साथ–साथ भाषा, शिल्प, दर्शन, संवेदना भी है।

आलोचना साहित्य को जाँचने–परखने की कसौटी है। आलोचना रहित साहित्य शीघ्र ही समाप्त हो जाता है। भारतीय काव्यशास्त्र, अलंकार, रीति, वक्रोक्ति ध्वनि, रस, औचित्य जैसे मानदंड प्रदान किय है तो दूसरी ओर पाश्चात्य काव्य शास्त्र ने अनुकरण, उदात्ता, कल्पना, बिंब के अलावा मनोविज्ञान, वर्गसंघर्ष जनतांत्रिक मूल्य, आदि को आलोचना के प्रितिमान प्रदान किये है। अस्तित्ववाद के चलते स्व की अभिव्यकति महत्वपूर्ण बनी। शोषण, अन्याय, गुलामी के खिलाफ आक्रोश का लावा भडका।जिससे साहित्य में आलोचना की कसौटीयों के रूप में तरह–तरह के विमर्श आए।

वर्ण व्यवस्था जन्म शोषण के खिलाफ उत्पन्न आक्रोश जन्य प्रतिक्रिया भारत में दलित विमर्श के रूप में साहित्य में आया। दलितों ने अपने जीवन की त्रासद स्थीती का अंकन साहित्य में किया। स्त्री–पुरुष जनलिंग व्यवस्था पर आधारित सामाजिक असमानता अन्याय और शोषण के खिलाफ बुलंद आवाज स्त्री विमर्श का है। भौगोलिक कारणों से संपर्क न बना सकनेवाले मानव–समूह, कबीले, बस्तियाँ पिछड़े, माने गये। शहरों गाँवो से दूर वनों में रहनेवाले ये लोग अपना जीवन–यापन आदिम पद्धति से ही करते रहे। गाँव–शहरों का शिष्ट समाज इन्हे जंगली कहने लगा। उनकी समस्या को वाणी देनेवाला आदिवासी विमर्श है। वर्ण, लिंग, भौगोलिक स्थानजन्य, प्राकृतिक निर्मित असमानता,

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

शोषण, अन्याय और अस्तित्व शून्यता से उबरने के लिए लिखा गया साहित्य–जन–तांत्रिक मूल्यों की रक्षा का काम करता है। चेतना को झंकृत कर बदलाव की मानसिकता का निर्माण करता है। वर्तमान हिन्दी साहित्य में एक नई कसौटी के रूप में किन्नर विमर्श का आगमन हुआ। यह विमर्श विशुद्ध मानवतावादी और समतावादी विमर्श है।

'ट्रांसजेंडर' : शब्द की व्युत्पत्ती–ट्रांसजेंडर या थर्ड जेंडर का ऑप्शन मिलता है । ज्यादातर लोग इस प्रश्न की गुत्थी सुलझाने में असफल हो जाते है। ट्रांसजेंडर एक जटिल शब्द है। इस शब्द के अर्थ का प्रयोग कई संदर्भ में किया जाता है। इसे ज्यादातर लोग छक्का यानी हिजडा समझते है। मेडिकल साइंस के अनुसार, ट्रांसजेंडर शब्द का प्रयोग चिकित्स विभाग में अप्राकृतिक तरीकों से लिंग बदलने के लिए किया जाता है। ट्रांसजेंडर शब्द दो शब्दों के मेल से बना है। Trans + Gender.Trans का मिनींग के उस पार के परे, दूसरे स्थान, दूसरी अवस्था में Gender का मिनींग लिंग होता है। यानी ट्रांसजेंडर शब्द का अर्थ दूसरी अवस्था में लिंग है। ट्रांसजेंडर मनुष्य की पहचान ट्रांस महिला या ट्रांस पुरूष के रूप में होती है।

केंद्र सरकार की तरफ से दाखिल एक याचिका की सुनवाई करते हुए ट्रांसजेंडरों की परिभाषा स्पष्ट की है, केवल थर्ड जेंडर ही ट्रांसजेंडर है। Male Transgender उस पुरूष को कहा जाता है जो महिला के रूप में पैदा हुई थी। लेकिन उसे पुरूष के तौर पर पहचाना जाता है। उसे मेल ट्रांसजेंडर कहते है। Female Transgender उस महिला को कहा जाता है जो पुरूष के रूप में पैदा हुआ था। लेकिन उसे महिला के तौर पर पहचाना जाता है। उसे Female Transgender कहते है। विकिपीडिया के अनुसार ट्रांसजेंडर शब्द उन लोगों के लिए प्रयोग किया जाता है जिनकी एक लैंगिक पहचान या अभिव्यक्ति उस लिंग से अलग होती है, जो उन्हे उनके जन्म के समय दी गई होती है।

ट्रांसजेंडर विमर्श का स्वरूप निम्नानुसार निर्धारित किया जा सकता है–

1. साहित्य में ट्रांसजेंडर विमर्श अधुनातन विमर्श है।
2. साहित्य में ट्रांसजेंडर पात्रों का चित्रण उनकी आत्मनिर्भरता, कार्यक्षमता प्रकट हो। उनकी जिजिविषा का पाठकों के मन–चेतना पर प्रभाव पड़े।
3. ट्रांसजेंडर को समाज की मुख्यधारा में लाना उनका पुनर्वास करना, ट्रांसजेंडर विमर्श का लक्ष्य है।
4. करुणा आक्रोश और बंधुभाव द्वारा पाठकों की मानसिकता का बदलाव ट्रांसजेंडर विमर्श करता है।
5. ट्रांसजेंडर के प्रति नजरिया बदलने का कार्य ट्रांसजेंडर विमर्श से संपन्न होता है।

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Principal

इससे ट्रांसजेंडर कल्याणकारी नियमों, कानूनों, उपचारों, सहायता आदि से अवगत कराया जाता है। मानव अपने मन के अंदर की सृजनता से साहित्य का निर्माण करता है। इसमें वह मानव का मुल्य जीवन ही चित्रीत करता है। साहित्य में जीवन की यथार्थ दृष्टि परिलक्षीत होती है। जैसे– जैसे मानव और संस्कृती में बदलाव आया है। वैसे–वैसे साहित्य के रचनाक्रम में भी परिवर्तन आया हुआ दिखाई देता है। समाज में घटित घटनाओं का ब्यौरा साहित्य समय–समय पर समाज के सामने लाता है। इसिलए तो कहा जाता है। साहित्य समाज का दर्पण है। हमे भारतीय साहित्य और समाज में सहानूभूति का भाव देखने मिलता है। साहित्य का उद्देश ही मानव और समाज का कल्याण करना होता है। 'साहित्य' शब्द का व्युत्पत्तिपरक 'सहितानां भावः साहित्यम' है। साहित्य में सहित अथ्वा सहयोग की भावना रहती है। साहित्य् मानव, के बीच भावात्मक सम्बन्ध स्थापित करता है। साहित्य व्यक्ति और समाज के बीच आत्मीयता का भाव उत्पन्न कर जीवन दृष्टि को समुन्नत और विस्तीर्ण करता है। आज का समय यह विमर्शों का बहु केंद्रीयता का समय है। अल्पसंख्यंक, दलित, वृध्द, आदिवासी, नारी आदि समुदाय अपने मूलभूत मानवाधकारों के लिए संघर्ष कर रहे हैं। साथ ही जेनेटिक डिफक्ट के कारण यदि कोई शीशु किन्नर के रूप में पैदा होता है ता उसमें उसका क्या दोष है। उसे भी तो जीने का अधिकार है।

यह एक ऐसा समुदाय है जो समाज के बीचों बीच उपस्थित है लेकिन उसका कोई अस्तित्व नहीं। अनादी काल से ही समाज में इस समुदाय की उपस्थिति दर्ज है पर खुद को सभ्य समझ्नेवाला समाज इस समुदाय को तिरस्कार और अपमान के दंश झोलने के लिए करता रहता है। तब किन्नर तब किन्नर उपहास के शिकार बन जाते है। किन्नर नाम लेते ही सबके मन में कुछ अजीब सी भावना निर्माण होती है। नाम लेनेवाले, किन्नरों के नाम से लज्जित होने वाले समाज में किन्नरों पर चर्चाएँ हो रही है। भारतीय समाज में इन्हे स्पष्ट रूप से तीसरे लिंग (उभयलिंग) के रूप में इनके अधकारों को मान्यता दी गई है। इनके अधिकारों को लेकर पहली बार सुप्रिम कोर्ट ने केंद्र और राज्य सरकार को ट्रांसजेंडर वालों की पहचान देने का आदेश दिया है।

खुद को सभ्य समझने वाला समाज आज भी उनके अधिकारों और अस्तित्व को अनदेखा करने लगता है। थर्ड जेंडर के साथ मानव होते हुए भी जानवरों सा व्यवहार हो रहा है। माँ–बाप के साथ ही साथ समाज भी उन्हें नकार रहा है। सरकार द्वारा सुविधाएँ दी है, बलकी अज्ञानतावश वे अपने अधिकारों का उपयोग नहीं कर पा रहे है। बेरोजगारी, शिक्षा का अभाव, समाज का नकार जैसी अनेक समस्याओं को लेकर थर्ड जेंडर समाज जी रहा है।

Sonpeth Late Ra... College, (ACS) Dist. ...

सामाजिक व्यवस्थाएँ उन्हे अंदर से खोखला कर दिया है। उन्हे समाज की मुख्य धारा में लाने के लिए हिन्दी साहित्यकारों का योगदान महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। भारतीय समाज के विभन्न राज्यों में विभिन्न भाषाओं में अलग-अलग नामों से जाना जाता है। हमारे प्राचीन ग्रन्थों में किन्नर शब्द का प्रयोग मिलता है। उर्दू, हिन्दी में हिजडा शब्द भी प्रयुक्त होता है। मराठी में हिजडा और छक्का शब्दों का प्रयोग, गुजराती में पावैया पंजाबी में खुस्रा और तेलुगु में कोज्जा मादा और नपुंसकुडू जैसे शब्दों के प्रयोग मिलते है।

वर्तमान समय में हिन्दी साहित्य में नारी, विकलांग, दलित जैसे विमर्श विमर्श पर चिंतन होने लगा है। हिन्दी साहित्य के 21 वी सदी के प्रारंभ्म् से प्रारंभ से ही किन्नर विमर्श को लेकर विस्तार से चर्चा के साथ-साथ उपन्यास विधा, कहानी विधाओं में चित्रण करने लगा है। नीरजा माधव के 'यमदीप', निर्मला भुरडिया का 'गुलाम मंडी', चित्रा मुद्‌गल का 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नालासोपारा' आदि के नाम उल्लखनीय है। कहानियों में बिन्दा महाराज, किन्नर, इज्जत के रहबर, नेग बीच के लोग, हिजड़ा जैसी कहानिया मिलती है। जो किन्नरों की व्यथा-कथा पर आधारित है। 'पन्नबा' किन्नर की दारूण स्थीती का चित्रण करती है। किन्नरों का समाज में होने वाला अपमान, जीते वक्त जगह पर नकारात्मक दृष्टि से देखा हैं। इतना ही नहीं मरने के बाद भी उन्हे दर्द के अलावा कुछ नही दिया लाशों को जूतों से पिटाई। किन्नर की मौत पर उसकी लाश की जूतों से पिटाई की खबर पढ ही रही थी कि पता चला पन्ना बा मर गया। इस कहानी में समाज का किन्नरों के प्रति दृष्टिकोण को लेकर गरिमा संजय दुबेजी लिखती है कोई काम पर रखे नहीं कोई मातापिता इस अभिशाप को साथ रखने को राजी नहीं, कोई नौकरी नहीं, कोई पढ़ाई नहीं, बेचारा मनुष्य जिए भी तो कैसे देह से परे हो, फिर भी जीता है एक किन्नर। यह कहानी केवल व्यथा का निर्माण करती नहीं बल्कि मानव मस्तिष्क पर प्रभाव डालती है। किन्नरों को मानव समाज इन्सान के रूप में देखता ही नहीं है। तो शिवप्रसाद सिंह की कहानी 'बिन्दा महाराज किन्नरों के दुःख दर्द, संताप, पढ़ाई, अंधविश्वास, मोह विडम्बना को व्यक्त करती है। बिन्दा के माध्यम से पिता द्वारा तिरस्कृत, पिता का सुख, पत्नी की प्रतीक्षा, बेटा-बेटी का मोह आदि से वंचित होने की मानसिकता को कहानी में उकेरा है। बिन्दा महाराज कहानी में बिन्दा समाज समाज का अंग होकर भी उसे सभी समस्याओं से लडना पड़ता है, अपने अस्तित्व के लिए।

पूनम पाठक जी की कहानी 'किन्नर' भी महत्वपूर्ण विचारों को लेकर सामने आयी है। इसमें किन्नरों के प्रति सभ्य भारतीय समाज को उजागर किया है, बस यात्रा के दरम्यान बगल में बैठे सीट पर मानसी बैठना नही चाहती,

College, Sonpeth • Late Ramesh... Dist. Parbhani

किन्नर को देखकर बसकण्डक्टर से झींकते हुए खुद के लिए दूसरा सीट मांगती है। जब उसे बसमें दूसरा सीट मिलता नही तब खडी होकर यात्रा करती है, उसी वक्त लड़कों की छेडखानी से बचाने का काम किन्नर ही करता है। तब तमाशबिन यात्रियों को अपमानित करते हुए मानसी व्यंग से कहती है। हिजड़ा ये नहीं बलकी आप सभी हो, जो अभी तक सारा तमाशा देख रहे थे, किसी हिंदी फिल्म की तरह। कुछ देर और चलता तो शायद एम.एम. एस. भी बनने लगते पर मदद के लिए हाथ भी आगे नहीं आया। इस वक्त मानसी को किन्नर देवदूत लगता है। वह नम आँखों से किन्न को धन्यवाद कहती है।

'नेग' कहानी लड़की होने के अबिशाप के साथ–साथ किन्नरों के परम्परा रहन–सहन और विवाह जैसे प्रसंगो में नाचने की प्रथा की अभिव्यक्ति करती है। लड़की होने की विडम्बना और बेटा होने पर किन्नरों को गवाना और नेग देना जैसी प्रथा भी इसमें झलकती है। बेटा–बेटी के भेदभाव के साथ किन्नरों की समस्याओं को भी चित्रित किया है। नेग कहानी में बताया है की किन्नर बेटी के जन्मपर भी खुशी से नाचना चाहता है 'लोचाची– हमारी तरफ से नेग– तुम्हारे घर में लक्ष्मी आई है– यह बताने में शर्म कैसी?' इसी तरह किन्नर अछूत रहकर भी समाज में अछूतेपन को दूर करने का प्रयास कर रहे है। समाज का किन्नरों के प्रति हो रहा अत्याचार, शोषण, हीन भावनाओं से ग्रसित समाज के प्रति अपनी व्यथाओं को वह प्रदर्शित करने की कोशिश कर रहा है। तो श्रीकृष्ण सैनी की 'हिजड़ा' कहानी में किन्नरों की दया मानवीयता की अभिव्यक्ति हुई है। इसमें मानसीक पीड़ा चित्रित हुई है। बस दुर्घटना में राघव और उसकी पत्नी की मृत्यू हो जाती है। तब उनका बेटा तीन चार साल का केवल जिंदा रहता है। राघव के दूर के रिश्ते का भाई उनके मकान का दावेदार बनता है, सुनील को मकान की बात से टालना चाहता है। तब रजिया नामक हिजडा सुनील की जिम्मेदारी खुद लेती है। सुनील पढ़ लिखकर अदिकारी बनता है। सभ्य कहलानेवाले समाज कि दृष्टि बचाने के लिए रजिया हेडमास्टर से कहती है। अपना खून देकर सुनील की जान बचाती है किन्तु विडम्बना यह होती की वह अपनी पहचान नही बना पाती आखिर इस मानसिक रूप से हिजडा हो की दुनिया में वह किस–किस को जवाब देती।

भारतीय समाज अभी भी किन्न रों को स्वीकार करने में हिचकिचाते हैं। सुप्रीम कोर्ट के दखल के बाद थोड़ी स्थिति परिवर्तीत हुई है। किन्नरों को स्वतंत्र पहचान मिलने के कारण उनमें चेतना का निर्माण होने लगी है। हिन्दी कहानियों में किन्नर भी इन्सान ही है इस प्रवृत्त का बोल–बाला होने लगा है। समाज द्वारा सताने का थोड़ा–सा कम प्रयास हुआ है। किंतु मानवीयता की दृष्टि से समाज उन्हे स्वीकार ने में हिचकता हुआ नजर आने लगा है।

संदर्भ

1. किन्न्र विमर्श साहित्य और समाज
2. गुलाममंडी
3. किन्नर कथा
4. पन्नबा– गरिमा संजय दुबे
5. बिन्दा महाराज
6. नेग
7. किन्नर– पूनम पाठक
8. हिजडा– श्रीकृष्ण सैनी
9. विमर्श का तीसरा पक्ष् –विरेंद्र प्रताप

Sonpeth • Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani

डॉ.निम्मी

जन्म: एरनाकुलम जिला

शिक्षा: एम. ए., एम. फिल., पी.एच.डी., पी.जी. डिप्लोमा इन हिंदी
(कोच्चिन विश्वविद्यालय), बी. एड. (महात्मा गांधी विश्वविद्यालय)

प्रकाशन व सह लेखन:
असगर वजाहत की रचनाओं में सामाजिक सरोकार (माया प्रकाशन)
जनभाषा हिंदी (लोकभारती प्रकाशन)
पटकथा लेखन और विज्ञापन कला (श्रृंखला प्रकाशन)
प्राचीन और मध्यकालीन हिन्दी कविता (जवाहर पुस्तकालय)

विविध राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय यूजीसी लिस्टेड व पीयर रिव्यूड पत्र – पत्रिकाओं एवं संपादित पुस्तकों में ५० शोध आलेख प्रकाशित। विविध पुरस्कारों से सम्मानित। विविध राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय पत्र पत्रिकाओं में सदस्यता।

संप्रति:
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
सरकारी महिला महाविद्यालय
तिरुवनंतपुरम – 695014, केरल।

Email: dr.nimmyanas@gmail.com
Blog: nimmyanas.blogspot.com
Website: www.nimmy.in.net

Also available at : flipkart.com amazon

माया प्रकाशन
(पुस्तक प्रकाशक एवं विक्रेता)
6A-540, आवास विकास हंसपुरम्
नौबस्ता, कानपुर-208021
मो० : 07618879266, 09451877266
E-mail : mayaprakashankanpur@gmail.com

ISBN 978-81-951311-8-1
9 788195 131181 >
₹750.00